राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)

रामावतार शर्मा
अध्यक्ष

महावीर प्रसाद सिंहल
सभाध्यक्ष

देवलाल गोचर
महामंत्री

प्रेस – विज्ञप्ति
शिक्षित राजस्थान विकसित राजस्थान

जयपुर, 03 नवम्बर 2015 – राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के दो दिवसीय प्रदेश शैक्षिक सम्मेलन के समारोप सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे माननीय कालीचरण सराफ, उच्च शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार ने शिक्षकों को आवहान करते हुए कहा कि हम यदि राजस्थान को विकसित राज्यों की श्रेणी में देखना चाहते है तो पहले राजस्थान को शिक्षित राजस्थान बनाना होगा। इस प्रक्रिया में राजस्थान के शिक्षकों का पूर्ण सहयोग चाहिये। राजस्थान सरकार ने शिक्षित राजस्थान बनाने के लिये तय किया है कि राजस्थान के प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर उच्च माध्यमिक विद्यालय होगा। वर्तमान सत्र में सरकारी विद्यालयों में नामांकन वृद्धि हेतु शिक्षकों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आने वाले सत्र से शिक्षा नीति में भी परिवर्तन करते हुए शिक्षा को ऐसा बनाने का प्रयास किया जायेगा कि शिक्षित छात्र के मन में ये अंकित हो जाये कि यह राष्ट्र मेरा है, इस राष्ट्र का अतीत गौरवमय है जिससे समाज की शिक्षा के प्रति आस्था बढ़ेगी।

उच्च शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा विभाग मंत्री ने अपने उद्‌बोधन में यह भी कहा कि अब तक जो संस्कृत शिक्षा विभाग बिना सेवा नियमों के चल रहा था, उसके लिये संस्कृत शिक्षा विभागीय सेवा नियमों का गठन किया गया है। देखने में यह आया है कि इन सेवा नियमों में कुछ त्रुटियाँ रह गयी है, इनके सुधार हेतु एक 5 सदस्यीय समिति का गठन किया जायेगा। उसमें संगठन को उचित प्रतिनिधित्व देते हुए उनके प्राप्त सुझावों के आधार पर त्रुटियों को दूर किया जावेगा।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि माननीय अरूण चतुर्वेदी, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री, राजस्थान सरकार, जयपुर ने अपने उद्‌बोधन में संगठनात्मक ढ़ाँचे को स्थापित करने के अतीत को याद करते हुए कहा कि श्रद्धेय जयदेव पाठक की चर्चा के बिना संगठन की कल्पना भी नहीं कर सकते। उन्होंने अपने संस्मरणों को ताजा करते हुए संगठन के कार्यकर्त्ताओं को श्री जयदेव जी पाठक से शिक्षा लेने को कहा कि जिस प्रकार श्री पाठक जी के शरीर का एक–एक कण संगठन हित में काम आये, उससे प्रेरणा लेते हुए हमें भी संगठन को आगे बढ़ाना होगा।

उन्होंने कहा कि शासन के भरोसे संगठन नहीं चला करते, संगठन को तो अपने कार्यक्रमों को धार देते हुए संगठन की भाषा में बात करने का जज्बा रखते हुए ही आगे बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने शिक्षकों को आहवान करते हुए कहा कि हमें ऐसे विद्यार्थी तैयार करने है जो अपने पैकेज के सामने देश, समाज, संस्कृति आदि का भी विचार करें।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए माननीय महेन्द्र कपूर, संगठन मंत्री, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने कहा कि आने वाले पीढ़ी को एक मूर्तिकार के रूप में गढ़ने वाला व्यक्ति ही शिक्षक बने। केवल वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में बनने वाले शिक्षकों से समाज का भला नहीं किया जा सकता, हम उच्च कोटि के शिक्षा संस्थान चाहते है लेकिन सरकारें उनकों बजट नहीं देती। लगभग 40 से 50 प्रतिशत पद हमेशा रिक्त रहते है ऐसी परिस्थिति में शिक्षा में गुणवत्ता की अपेक्षा व्यर्थ होगी। देश का उत्थान करना है, देश में एक समान शिक्षा होनी चाहिये। गरीब का छात्र भी और अमीर का छात्र भी एक प्रकार के शिक्षा संस्थान एवं पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर सके। इस प्रकार की व्यवस्था हमें करनी होगी। यदि शिक्षा में ही एकरूपता नहीं रहेगी तो समरूप समाज की कल्पना कैसे कर सकेंगे।

श्री कपूर ने कहा कि जब तक शिक्षा–शिक्षार्थी–शिक्षक और समाज की जरूरतों, सोच व लक्ष्यों में तादात्म्मता स्थापित नहीं होगी। तब तक हमारा राष्ट्र सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता। वर्तमान शासन और प्रशासन ने इस ओर सकारात्मक कदम उठाकर शुरूआत करी है। इसके परिणाम कुछ समय पश्चात आयेंगे। जिसकी सम्पूर्ण शैक्षिक जगत को प्रतीक्षा है। अखिल भारतीय राष्टीय शैक्षिक महासंघ ने एक सजग प्रहरी के नाते शिक्षक हितों की रक्षा के लिये सदैव तत्पर है।

श्री देवलाल गोचर, महामंत्री, राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) ने उच्च शिक्षा मंत्री एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री के सम्मुख संगठन की माँगों को रखते हुए कहा कि सरकार के पास हमारा माँग पत्र लम्बित है, उस पर चर्चा करते हुए शीघ्र निस्तारण करें। साथ ही 2 नयी माँग उठाते हुए कहा कि राजस्थान के शिक्षकों को भी पंजाब के शिक्षकों के समान ग्रामीण भत्ता दिया जाये। इसी के साथ संस्कृत विभाग में सेवा नियमों में अविलम्ब त्रृटियों को दूर किया जाये। विद्यालय में रिक्त पदों को शीघ्र भरा जाये। द्वितीय वेतन श्रृंखला के अध्यापकों के वेतन विसंगतियों को दूर करने एवं सभी शिक्षकों को केन्द्र के समान वेतन एवं सुविधायें देने की माँग की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री बजरंग प्रसाद मजेजी, कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि उतावले पने से किये गये कार्य की सफलता पर संदेह ही रहता है। राज्य सरकार ने जो विद्यालयों का एकीकरण किया, उस पर विचार करना चाहिये। एकीकरण के कारण करोंड़ों रूपये के विद्यालयी भवन अराजक तत्वों के द्वारा असामाजिक कार्यों के अड्‌डें बनते जा रहे हैं। लोग उन पर अतिक्रमण कर रहे है। इस पर भी सरकार को विचार करना चाहिये।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में संयोजक बसन्त जिन्दल ने आये हुए अतिथियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम का संचालन श्री नवीन कुमार शर्मा, उपाध्यक्ष (मा. क्षेत्र) राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) ने किया।

सादर प्रकाशनार्थ
श्रीमान् सम्पादक महोदय

भवदीय

(ताराशंकर शर्मा)
जिला मंत्री जयपुर द्वितीय
मो. 9530167807